# अलंकार

अलंकार का शाब्दिक अर्थ है "आभूषण या गहना। जिस प्रकार स्त्री के सौन्दर्य वृद्धि में आभूषण सहायक होते हैं। उसी प्रकार काव्य की शोभा बढ़ाने में अलंकार सहायक होते हैं।

अलंकार को मुख्यत: दो भागो में बांटा गया -

- शब्दालंकार - शब्द पर आश्रित अलंकार - अनुप्रास, यमक, श्लेष
- अर्थालंकार - अर्थ पर आश्रित अलंकार - उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति आदि।
- उभयालंकार - शब्द और अर्थ दोनो पर आश्रित अलंकार

## शब्दालंकार

### 1. अनुप्रास

अनुप्रास शब्द 'अनु' तथा 'प्रास' शब्दो से मिलकर बना है। अनु' शब्द का अर्थ है - बार-बार तथा 'प्रास' शब्द का अर्थ है - वर्ण
जहाँ वर्णो की आवृत्ति बार-बार होती है वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

उदाहरण - * तरन तनूजा तट तमाल तरूवर बहु छाए।

### अनुप्रास अलंकार के भेद -

1. छेकानुप्रास - किसी पंक्ति में एक से अधिक अक्षरो का बार-बार आना।

उदाहरण * नानी तेरी मोरनी को मोर ले गए,
बाकी जो बचा काले चोर ले गए।

* रीझि रीझि रहसि रहसि हँसि हँसि उठे,
साँसें भरि आँसू भरि कहत दई दई।

2. वृत्यानुप्रास - किसी पंक्ति में एक अक्षर का बार-बार आना।

उदाहरण - * चन्दन सा बदन, चंचल चितवन।

* सपने सुनहले मन भाए।

3. लाटानुप्रास - किसी पंक्ति में एक शब्द का बार-बार आना।

उदाहरण - * आदमी हूँ आदमी से प्यार करता हूँ।

* तेगबहादुर, हाँ, वे ही थे गुरु-पदवी के पात्र समर्थ,
तेग बहादुर, हाँ, वे ही थे गुरु-पदवी थी जिनके अर्थ।

4. अंत्यानुप्रास - पंक्ति के अंतिम अक्षरो में समानता हो।

उदाहरण - चौदहवीं का चाँद हो या आफताब हो,
जो भी हो तुम खुदा कसम लाजवाब हो।

* मांगी नाव न केवटु आना।
कहहि तुम्हार मरमु न जाना॥

5. श्रुत्यानुप्रास - जब पंक्ति में एक ही वर्ग के वर्णो का बार-बार आना।

उदाहरण - दिनान्त था थे दिननाथ डूबते,
सधेनु आते गृह ग्वाल बाल थे।

(यहाँ पर त वर्ग के वर्ण बार-बार आ रहे है - त, थ, द, ध, न)

## 2. (यमक अलंकार)

"जहां कोई शब्द एक से अधिक बार प्रयुक्त हो तथा उसके अर्थ अलग-2 हों वहां यमक अलंकार होता है।"

ट्रिक — जब पंक्ति में कोई शब्द एक से अधिक बार आये।

उदाहरण- * सजना है मुझे सजना के लिए। (सजना - श्रृंगार, सजना - नायक)

* कनक-कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय. (कनक - सोना, कनक - धतूरा)

* काली घटा का घमंड घटा। (घटा - घटाएं, घटा - कम होना)

* कहे कवि बेनी बेनी व्याल की चुराई लीनी (बेनी कवि का नाम. बेनी - चोटी)

* तीन बेर खाती, ते वे तीन बेर खाती हैं (बेर - बार, बेर = फल)

## 3. श्लेष अलंकार

"जब किसी शब्द का प्रयोग एक बार ही होता है किन्तु उसके अर्थ अलग-2 होते हैं वहां श्लेष अलंकार होता है।"

ट्रिक — जब ~~पंक्तिया~~ पंक्ति में सभी शब्द अलग-अलग हों।

उदाहरण- * चिरजीवहु जोरी जुरे, क्यों न सनेह गंभीर,
को घटि ये वृषभानुजा, वे हलधर के बीर।
(इन पंक्तियों में वृषभानुजा - राधा और बैल की बहिन गाय)

* चाहनहार सुवर्ण के, कविजन और सुनार--
(यहां पर सुवर्ण - अच्छा रंग और सोना)

* प्रियतम बतलादो लाल मेरा कहाँ है?
(यहाँ पर लाल = पुत्र, लाल = रत्न)

* कहां उच्च वह शिखर, काल का जिस पर अभी विलय था?
(यहाँ पर काल = समय, काल = यमराज)

* मंगा को देख पट देत बार-बार
(यहाँ पर पट = वस्त्र, पट = किवाड़)

## 2. अर्थालंकार

**1. उपमा अलंकार** - जहाँ एक वस्तु या व्यक्ति की तुलना किसी अन्य वस्तु या व्यक्ति से की जाए। इसके 4 अंग है -

1. उपमेय - जिसकी तुलना की जाए।
2. उपमान - जिससे तुलना की जाए।
3. सामान्य धर्म - जिससे दोनो व्यक्ति या वस्तु से तुलना की जाए।
4. वाचक शब्द - जिस शब्द का तुलना के लिए प्रयोग किया जाए जैसे - सा, सी, जैसे आदि।

ट्रिक - जब पंक्ति में योजक का चिह्न (-) आये और उसके पीछे -सा, सी, जैसे आदि लगा हो।

उदाहरण -
* मखमल के झूले पड़े हाथी-सा टीला।
* निकल रही मर्म वेदना करुणा विकल कहानी-सी।
* हरि पद कोमल कमल-से।
* हाय फूल-सी कोमल बच्ची। हुई राख की थी ढेरी॥
* पीपर पात सरिस मन डोला।

**2. रूपक अलंकार** - जहाँ किन्ही दो व्यक्ति या वस्तु में इतनी समानता हो कि अंतर करना मुश्किल हो। (जहाँ उपमेय, उपमान का रूप धारण करले)

ट्रिक - जब पंक्ति में दो शब्दो के बीच योजक का चिह्न (-) आये और उसके पीछे सा, सी, जैसे आदि न आये।

उदाहरण
* ये रेशमी-जुल्फें, ये शरबती-आँखे। इन्हें देखकर जी रहे हैं सभी॥
* मैया मैं तो चन्द्र-खिलौना लैहौ।
* वन शारदी चंद्रिका-चादर ओढ़े।
* राम नाम मणि-दीप धरि जीह-देहरी द्वार।
* पायो जी मैंने राम-रतन धन पायो।
* चरण-कमल बन्दौ हरिराय गाई।
* मैं बलि-पय का अंगारा हूँ।

**3. उत्प्रेक्षा अलंकार** -

जहाँ समानता के कारण उपमेय में संभावना या कल्पना की जाए।

ट्रिक - जब पंक्ति में - मानो, मनु, मनहुँ तथा जानो, जनु, जनहुँ आये।

उदाहरण -
* सिर फट गया उसका वहीं, मानो अरुण रंग का घड़ा।
* मुख मानो चन्द्रमा है।
* उस काल मारे क्रोध के तन काँपने उनका लगा। मानो हवा के वेग से सोता हुआ सागर जगा
* कहती हुई यों उत्तर के नेत्र जल से भर गए हिम के कणों से पूर्ण मानो हो गए पंकज नए

## उपमा, रूपक तथा उत्प्रेक्षा में अंतर

* उपमा - दो चीजों की तुलना करना
  * नयन, मृगनयन सरिस सुन्दर हैं।
  * पीपर पात सरिस मन डोला।
* रूपक - दो चीजों को एक कर देना
  * मृगनयनों की सुन्दरता का क्या कहना
  * पीपर पात हुआ मन मोरा।
* उत्प्रेक्षा - दो चीजों के समान होने की कल्पना करना
  * सुन्दर नयन मानो मृग नयन हैं।

BY- MOHIT TEZZAS

## 4. अतिशयोक्ति अलंकार-

जहां किसी व्यक्ति या वस्तु का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया जाए।

**उदाहरण**

* चांदी जैसा रंग है तेरा सोने जैसे बाल
  इक तू ही धनवान है गोरी बाकी सब कंगाल

* आगे नदियां पड़ी अपार, घोड़ा कैसे उतरे उस पार
  राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक था उस पार।

* लहरें व्योम चूमती उठती

* हनुमान की पूंछ में लग न पाई आग
  लंका सारी जल गई गए निशाचर भाग

* देख लो साकेत नगरी है यही
  स्वर्ग से मिलने गगन जा रही।

## 5. मानवीकरण अलंकार-

जहां निर्जीव वस्तुओं में मानवीय गुणों से संबंधित क्रियाकलापों का वर्णन किया जाता है।

**उदाहरण**

* सूरज हुआ मद्धम चांद जलने लगा
  आसमां ये हाय क्यूं पिघलने लगा
  मैं ठहरा रहा जमीं चलने लगी।

* फूल हंसे कलियां मुस्काईं।

* सागर के उर पर नाच-नाच,
  करती हैं लहरें मधुर गान।

* बीती विभावरी जाग री
  अम्बर पनघट में डुबो रही तारा घट उषा नागरी

* मेघ आए बन ठन के संवर के।

## 6. विभावना अलंकार

जहां कारण के अभाव में भी कार्य हो रहा हो, वहां विभावना अलंकार होता।

**उदाहरण**

बिनु पग चले सुने बिनु काना।
कर बिनु कर्म करै बिधि नाना॥

## 7. विरोधाभास अलंकार

जहां वास्तविक विरोध न होते हुए भी विरोध का आभास हो।

**उदाहरण-**

* या अनुरागी चित्त की, गति समझे नहीं कोई
  ज्यों ज्यों बुड़े श्याम रंग, त्यों त्यों उज्जलु होय।

* पर अथाह पानी रखता है यह सूखा सा गात्र।
  ~~आग से हिमजल बिंदु का ढलकना~~

* आग हूं जिससे ढुलकते बिन्दु हिमजल के।
  शून्य हूं जिसमें बिछे हैं पांवड़े पलकें।

## 8. सन्देह अलंकार-

जहां उपमेय के लिए दिये गये उपमानों में सन्देह बना रहे तथा निश्चय न हो सके।

**उदाहरण-**

* सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है,
  सारी ही की नारी है कि नारी की ही सारी है॥

* नग, जुगनू या तारे? | बूझ न पाये हारे।

* ~~[illegible]~~

* भूखे नर को भूलकर, हर को देते भोग।
  पाप हुआ या पुण्य यह? करूं हर्ष या सोग?

* ख्वाब हो तुम या कोई हकीकत,
  कौन हो तुम बतलाओ?

* चौदहवीं का चांद हो। या आफताब हो?
  जो भी हो तुम खुदा कसम लाजवाब हो।
  (नायक तय नहीं कर पा रहा कि नायिका को चांद माने या सूर्य)